बाल विज्ञान पत्रिका जुलाई 2010

चकमक

चलते-चलते

- गुलज़ार

आदमी के पाँव दो हैं, पाँव-पाँव चलता है
पंछी भी कभी-कभी तो छाँव-छाँव चलता है

पैर हैं न पंख हैं फिर भी ये हवा चले
चलने वाले कैसे-कैसे, देखो किस तरह चले

-पूरी कविता बैक कवर पर

मूल्य 20